द्वितीय अध्याय

"शेखर : एक जीवनी" में जीवन दर्शन

प्रस्तावना :-

"शेखर : एक जीवनी" तीन भागों में विभाजित है। उसकी कथा एक ही धागे में गुँथी हुई है। कथा के तीन भाग अपने में पूर्ण हैं। "कहा जा सकता है कि जीवनी वास्तव में तीन स्वतंत्र उपन्यासों का अनुक्रम है, ऐसा होने पर तो विशेष सफाई देने की जरूरत नहीं है।"[1] इस दृष्टि से इनको अलग-अलग उपन्यासों के रूप में पढ़ा जा सकता है। "अज्ञेय" जी ने भी यही कहा है कि तीनों भागों में एक ही कथासूत्र है और उनमें जो कहा गया है उसका एक ही धागा है जो एक ओर एकरूप है।

शेखर के द्वारा "अज्ञेय"जी हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में आते हैं और उपन्यास का एक नया युग आरंभ करते हैं। "अज्ञेय"जी प्रयोगवादी साहित्यिक है। उन्होंने अपनी सभी रचनाओं में नये-नये प्रयोग किये हैं। "शेखर : एक जीवनी" एकत्रित वेदना की एक रात में देखे हुए दृश्यों का वर्णन है। "शेखर : एक जीवनी मानस विश्लेषण के द्वारा एक विशेष दर्शन के निर्माण का प्रयास भी है। यह उपन्यास शेखर नामक एक विद्रोही व्यक्ति के "मानस विश्लेषण" की कथा है।"[2]

"शेखर : एक जीवनी" जीवनीशैली के ढंग में लिखा हुआ महाकाव्य के समान उपन्यास है। इसमें उस युग के जीवन के पूरे अंगों का चित्रण किया गया है। जैसे महाकाव्य में मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक का वर्णन होता है उसी तरह "अज्ञेय"जी ने भी किया है - "मन की अतल गहराइयों का सूक्ष्म विवेचन विश्लेषण कार्यकारण परंपरा के रूप में जीवन का विज्ञान संगत आत्मनिरीक्षण प्रेरणाओं सहित व्यक्तित्व का क्रमिक विकास निदर्शन।"[3]

जीवन का अलगाव व्यक्ति भेद के कारण व्यक्तित्व में फर्क और जीवन की ओर देखने का अलग दृष्टिकोण होता है इसी कारण से हर एक उपन्यास के विचार तत्वों में फर्क दिखाई देता है।

जीवन जगत् में मानव ही केंद्र बिंदू है इसी कारण से उपन्यास में व्यक्त होनेवाला उद्देश्य भी मानव जीवन के अधिक नजदिक रहता है यही उपन्यासोंका सबसे बड़ा उद्देश्य होता है। मानव को अंधेरे से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाने का प्रयत्न अच्छे उपन्यासों में होता है। उन उपन्यासों में लेखक की उपदेशक की वृत्ति दिखाई नहीं देती, फिर भी उसके शब्दों में यह भाव दिखाई देता है कि उसका विचार तत्व क्या है और वह कहना क्या चाहता है। इसी महान उद्देश्य पर उपन्यास का बडप्पन अवलंबित रहता है।

कृति का सामान्य पर्यालोचन :-

"शेखर : एक जीवन" उपन्यास में "अज्ञेय"जी पर आधुनिक मनोवैज्ञानिक फ्रायड़ के विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। बाल मन की तीन शक्तियाँ होती हैं। अहं, भय और काम-ये तीनों शक्तियाँ शेखर के चरित्र निर्माण में कभी मदद करती हैं तो कभी बाधाएँ भी बनी हुई हैं। "अज्ञेय" के इस उपन्यास में व्यक्तिगत विचार के साथ सामाजिक विचार भी आ गया है। जिस जगह पर व्यक्तिगत विचारों के आधार पर वैज्ञानिकता है वहाँ सामाजिक विचार का भी जोर है। जन्म, मृत्यु और ईश्वर के बारे में शेखर के मन में अनेक उलझनें पैदा होती हैं। उन्हें सुलझाने के प्रयत्न में वह रहता है और अधिक बेचैन हो उठता है। "बचपन की कुछ प्रवृत्तियाँ अहं, जिज्ञासा, स्वच्छंदता, अन्याय के विरूध्द लड़ना आदि ने शेखर को विद्रोही एवं क्रांतिकारी बनाया है।"[4]

"अज्ञेय" की औपन्यासिक कृति "शेखर : एक जीवनी" के प्रथम भाग का प्रकाशन सन 1941 और द्वितीय भाग का प्रकाशन सन 1944 में हुआ था। "शेखर : एक जीवनी" एक बड़ा उपन्यास है फिर भी उसका गठन अत्यंत चुस्त है। -

प्रथम भाग "उत्थान" में प्रवेश के अतिरिक्त चार खंड हैं :

1. प्रथम खंड : उषा और ईश्वर
2. द्वितीय खंड : बीज और अंकुर
3. तृतीय खंड : प्रकृति और पुरूष
4. चतुर्थ खंड : पुरूष और परिस्थिति

दूसरा भाग "संघर्ष" के भी चार खंड हैं :

1. प्रथम खंड : पुरूष और परिस्थिति
2. द्वितीय खंड : बंधन और जिज्ञासा
3. तृतीय खंड : शादी और शेखर
4. चतुर्थ खंड : धागे, रस्सियाँ, गुंझर

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

"प्रवेश" खंड जैसे किसी विशाल भवन का प्रवेश द्वार है, वहाँ शेखर से हमारी भेंट होती है और जैसे उसकी उँगली पकड़कर इस भवन के विभिन्न कक्षों में हम प्रवेश करते हैं। काल कोठरी में बैठे हुए उपन्यास के नायक शेखर के फाँसी चिंतन से प्रवेश खंड का आरंभ होता है। मौत के एकदम करीब आकर वह अपनी मृत्यु के बारे में सोच रहा है, अपने जीवन की सिध्दि के बारे में सोच रहा है। यह उपन्यास "फ्लैश बैक" की टेकनिक से आगे नही बढ़ता। यहाँ नायक शेखर मौत के निकट वर्तमान के जिस बिन्दु पर खड़ा है वहाँ से वह विभिन्न दिशाओं में देखता है फिर उसी बिन्दु पर लौट आता है। जब शशि की याद में डूब कर वह बाहर आता है, तब शैशव की स्मृति उभरती है। तब शेखर आठ वर्ष का था। श्रीनगर की एक झील में शेखर फूल तोड़कर उनकी माला बनाकर अपनी बहिन सरस्वति के गले में डाल रहा था।

शशि, सरस्वति के बाद शारदा की स्मृति आती है। फिर माँ के प्रति धिक्कार की भावना जगानेवाली घटना याद आती है। सामने पड़े फूलों को देखकर उन्हें भेजनेवाली शीला का स्मरण हो आता है।

इस प्रवेश खंड के बाद प्रथम भाग के प्रथम खंड "उषा और ईश्वर" में शेखर स्मृतियों के आधार पर शैशव के आरंभ का चित्रण करता है। आशैशव शेखर में विद्राही वृत्ति है। स्कूल में पढ़ने नही जाता, घर आनेवाले मास्टरों को परेशान करता है। इसी छोटी उम्र में वह अकेलेपन का अनुभव करता है। और उसे सोचने की आदत है। "ईश्वर" जैसी भारी समस्या के बारे में भी वह सोचता है। उसी उम्र में अपनी बहिन सरस्वति के प्रति एक आकर्षण अनुभव करता है। शेखर "ईश्वर" को भी नहीं मानता और प्रार्थना में भी नही मानता, वह सिर्फ दिन भर घूमता ही रहता है। उन दिनों श्रीनगर में चश्माशाही से ऊपर एक महल का खंडहर है। कहते हैं कि यह महल राजकुमारी जेबुन्निसा ने बनवाया था। शेखर सामने आकर नीचे डल झील का दृश्य देखने लगा। धीरे - धीरे उसके ऊपर एक सम्मोहन सा छा गया, एक मुर्छा सी उसे लगी - " उसके पास - उसके पास नही", उसके भीतर, उसके सब ओर, कुछ आया है, कुछ जिसका वह वर्णन नही कर सकता, लेकिन जो बहुत सुन्दर है, बहुत भव्य, बहुत पवित्र--- इतना पवित्र कि शेखर को लगा वह उसके स्पर्श के योग्य नहीं है, वह मैला है, मल में आवृत्त है, छिपा हुआ है---।"[5] उसी सम्मोहन में उसने एक-एक करके अपने सब कपड़े उतार डाले और कैवल्य का अनुभव करता है।

द्वितीय खंड "बीज और अंकुर" में विदेशी के प्रति उनके मन में घृणा जगती है। गाँधीजी के प्रति अपनी श्रध्दा प्रकट करने के लिए "राष्ट्रीय नाटक" लिखता है।

तृतीय खंड "प्रकृति और पुरूष" में उसके किशोर विश्व में सिर्फ सरस्वती के प्रवेश होने की कथा है। नास्तिक शेखर सरस्वती का मूर्तिपूजक बनता है। दक्षिण निवास के समय शारदा का उसके जीवन में प्रवेश होता है। वयः संधि की इस बेला में इस बालिका का परिचय शेखर में एक अपूर्व सम्मोहन जगाता है। मेट्रिक की परीक्षा देने उसे लाहौर जाना पड़ता है वहाँ शारदा से आक्रान्त शेखर के जीवन में शशि का प्रवेश होता है। वह उस समय तो प्रभावी नहीं होता। लाहौर से दक्षिण में लौटकर वह पाता है कि शारदा के घर में ताला लगा हुआ है, मकान खाली है। वहाँ वयः संधि का ज्वार समाप्त हो जाता है। शेखर की किताब पढ़ने से स्त्री-पुरूष के संबंध में उसे ज्ञान होता है। कॉलेज जाने की तैयारी में पुस्तकें देखते हुए रोमाँ रोलाँ का यह वाक्य पढ़ा कि "सत्य उनके लिए है जिनमें उसे सह लेने की शक्ति है, उस दिन उसने अनुभव किया था कि वह संपूर्ण है, मुक्त है, और पुरूष है।"[6]

चतुर्थ खंड "पुरूष और परिस्थिति" मद्रास में शेखर के कालेज जीवन के दिनों का वर्णन है। उसकी उम्र पन्द्रह वर्ष की है। मद्रास में अकेलेपन की अवस्था में कुमार नामक लड़के से परिचय होता है। इन दिनों शेखर समाजसेवा के आदर्श से आक्रान्त होता है।

परीक्षा के दिनों त्रिवेन्द्रम जाने पर शारदा से भेंट होती है, लेकिन शारदा अंत में उसे कह देती है कि, "तब तो जान पड़ता है, तुम्हें ऐसा सोचने का मौका देना ही पड़ेगा कि मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं चाहती।"[7] शेखर अनुभव करता है कि सब कुछ समाप्त हो गया है। और मद्रास से बिदा लेने के लिए वह समुद्र तट पर गया।

"शेखर : एक जीवनी" शेखर नामक व्यक्ति के बौध्दिक संघर्ष की कथा है। जिसके पीछे राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि है यह उपन्यास चरित्र प्रधान है। इसमें शेखर के बचपन से कॉलेज तक के जीवन की कथा चित्रित है। उसके जीवन को ढालने वाले चरित्र विशेषतः नारी पात्र इसमें आते हैं। शेष पुरूष पात्र उतने प्रधान नहीं हैं। शेखर के पिता एक सशक्त पुरूष पात्र की तरह अंकित है। स्त्री पात्रों में उसकी मौसी की लड़की शशि, उसकी माँ, उसकी बहन सरस्वती और घर के बाहर की शारदा उसके प्रेरणा बिंदु हैं जो शेखर के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक बनती हैं। जीवन की छोटी से छोटी घटनाएँ एवं जिज्ञासाएँ उचित समाधानों के अभाव में ग्रंथियों के रूप ग्रहण कर लेती हैं और बड़े होने पर यही ग्रंथियाँ शेखर के चरित्र में विद्रोह और घृणा के जन्म का आधार बनती हैं। हर घटना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, एक संवेदनशील कलाकार के हृदय पर पड़नेवाला असर इसमें दिखाया गया है। उसके चारित्रिक गुण, दृढ़ता, निर्भीकता और स्वाभिमान कैसे बढ़ता गया यह स्पष्ट किया है। बचपन में माँ का स्वभाव उसे ध्वंसात्मक बनाता है। परंतु बहन सरस्वती उसे अधिक सहानुभूति देकर

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

उसे कोमल बनाती है। माँ का वात्सल्य, बहन के प्रति प्रेम, हम-उम्र साथियों और लड़कियों के प्रति शारीरिक आकर्षण, प्रेम सैक्स आदि से शेखर के मन में पैदा होनेवाली भावना और वासना के घात-प्रतिघात शेखर बहुत सूक्ष्मता से अंकित करता है और उसमें विद्रोह वृत्ति बढ़ती है। उसका विद्रोह किसी एक वर्ग या संस्था या समाज के प्रति है; उसकी व्यक्ति की स्वतंत्रता के मूल्य की प्रतिस्थापना की ओर है।

"शेखर : एक जीवनी" भाग दो, 1944 में प्रकाशित दूसरा खंड है। इसमें क्रान्तिकारी रूप तथा विद्रोही प्रवृत्ति का मुखरित स्वरूप देखने को मिलता है। यहाँ कथा की मूल नायिका शशि, शेखर की मौसी की लड़की प्रधान हो उठती है। शेखर कॉंग्रेस अधिवेशन में स्वयंसेवक बनता है। वहाँ शेखर को गिरफतार किया जाता है, जेल में बाबा मदनसिंह, मोहसिन और हत्यारा रामजी आदि व्यक्तित्व के असाधारण चरित्रों के संपर्क में शेखर आता है। शशि का रामेश्वर से विवाह होता है, शेखर के प्रति शशि का परित्याग कर देता है। कथा में शेखर और शशि के बीच स्नेह का निर्माण होता है, परंतु वह दूसरे के व्यक्तित्व की स्वतंत्रता का आदर करते हैं और प्रेम में बलिदान की एक नई परिभाषा शेखर के क्रांतिकारी व्यक्तित्व में एक विलक्षण काव्यात्मक कोमलता निर्माण करती है।

"शेखर : एक जीवनी" के दूसरे भाग का नाम "संघर्ष" है। प्रथम खंड "पुरूष और परिस्थिति" में शेखर का परिस्थितियों से मुकाबला शुरू हो गया है। यह मुकाबला शेखर के व्यक्तित्व विकास का है। जब शेखर मद्रास में पढ़ता था उसी वक्त समाजसेवा के कार्य में रत रहते हुए भी वह शारदा को नहीं भूल सकता था। लेकिन अंत में भ्रम दूर होने के बाद मद्रास से वह अपने लाहौर आता है। यहाँ अकेलापन नहीं परंतु सभी में व्याप्त एक ही आत्मा का ज्ञान होता है। परीक्षा के बाद शशि के पिता के देहांत के समाचार पाकर शशि के घर जाता है। अत्यंत संवेदना से शेखर उस घर का सदस्य बन जाता है। उस वक्त राष्ट्रीय कॉंग्रेस के अधिवेशन में शेखर को स्वयंसेवक दल का अधिकारी नियुक्त किया जाता है। वहाँ वह बहुत अनुभव पाता है। वहाँ एक सी.आय.डी. को मारपीट की घटना में शेखर को पकड़कर जेल ले जाते समय शशि के यह शब्द याद आते हैं, "दु:ख उसी की आत्मा को शुध्द करता है, जो उसे दूर करने की कोशिश करता है। शुध्दि दूसरे के साथ दु:खी होने में नहीं, दूसरे के स्थान पर दु:खी होने में है....।"[8]

द्वितीय खंड "बंधन और जिज्ञासा" में एक जेल में बंद कैदी के रूप में उसका अपना चित्रण है। अब वह सच और झूठ के संबंध में फिर से विचार करता है। उसके सामने अनेक प्रश्न हैं। शशि उसे जेल में देखने के लिए आती है। शेखर के बड़े भाई ईश्वरदत्त साथ रहने के कारण शशि ज़ादा बोल नहीं सकी। चलते-चलते शेखर की स्थिर आँखों से देखकर कहा, "वीर कभी अपराधी नहीं

होते----[9] जेल में बाबा मदनसिंह और मुहम्मद मोहसीन से शेखर का परिचय होता है। और जीवन की ओर देखने के उसके दृष्टीकोण में बदलाव आता है। शेखर जेल में है उसी समय शशि का विवाह हो जाता है। शेखर जेल से मुक्त होता है।

तृतीय खंड "शशि और शेखर" में शेखर और शशि के बढ़ते जानेवाले प्रेम संबंध का चित्रण है। वह क्रांति के संबंध में कुछ लिखकर उससे संबंध जोड़ना चाहता है, और एक नया मार्ग अपनाना चाहता है। शशि से वह अनेक बार मिलता है। इसी कारण से शशि के पति के मन में शंका पैदा होने लगती है। उस समय "हमारा समाज" नामक पुस्तक लिखता है। उस पुस्तक में जो विचार लिखे थे उससे कोई भी प्रकाशक उसे जैसा का वैसा छापने के लिए तैयार नहीं होता। प्रकाशक उसमें बहुत बदल करता है इसी कारण वह वापस लाता है। शेखर आत्महत्या की कोशिश में बार-बार बच जाता है। जब वह घर आता है तब शशि उसकी प्रतीक्षा करती बैठी हुई दिखाई देती है। शेखर कहता है, "अभिप्राय मैं नहीं जानता तुम्हें जानता हूँ, और जानता हूँ कि जितने स्वप्न मैंने देखे हैं, सब तुममें आकर घुल जाते हैं-"[10]

चतुर्थ खंड "धागे, रस्सियाँ, गुंझर" में शशि को उसका पति पीटकर घर से निकाल देता है और शशि और शेखर साथ-साथ रहने लगते हैं, इसका कारण शशि रोग से पीड़ित है। शेखर उसकी सेवा करता है। विक्षोभकारी विचारों के प्रचार के लिए शेखर "गरम" नामक उपन्यास लिखता है। इसी कारण से उसका लाहौर में रहना सुरक्षित नहीं है ऐसा विचार करके वह दिल्ली आता है। दिल्ली में यमुना के किनारे पर एक घर में शशि और शेखर साथ-साथ रहते हैं। दोनों में मानसिक दृष्टि से स्नेह प्रकट होता है। परंतु शशि का स्वास्थ्य गिर जाता है, अंत में शेखर के निकट ही उसकी मृत्यु हो जाती है। शशि का सारा शरीर निःस्पन्द जड़ हो गया था सिवाय आँखों के। आँखें शशि की मरी नहीं, "हम दोनों वर्षों से एक भुवन बनाते रहे हैं, तुम और मैं, जिसमें न तुम रहोगे, न मैं --- किन्तु हम उसमें नहीं रहेंगे, इसी मात्र से वह कम सुन्दर नहीं होगा ----"[11] अंत में शेखर लाहौर जाने की तैयारी करता है और शशि की याद साथ लेकर चला जाता है।

जीवन दृष्टि :

इस उपन्यास की मुख्य विशेषता इसकी व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि है। उपन्यास का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग इसका विचार पक्ष एवं जीवन दृष्टि है। यहाँ निम्नांकित मुद्दों के क्रम से लेखक की चिंतन सरणि को स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे -

1) व्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा और स्वातंत्र्य की खोज।

2) विद्रोह भावना का प्राबल्य-विद्रोह में सिध्दि का समर्थन

3) प्रेम की नवीन मौलिकता एवं आत्मपीड़ा का चित्रण।

4) सम सामायिक समस्याओं की अभिव्यक्ति।

1) व्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा और स्वातंत्र्य की खोज :

यथार्थरुप में व्यक्ति का अहं, भय और लिंग संबंधी प्रेरणाओं को बहुत अधिक महत्त्व देने का परिणाम यह हुआ कि समाज की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा और सच तो यह है कि फ्रायड़ के मानसशास्त्र के मूलभूत सिध्दान्तों के अनुसार व्यक्तिवाद की निर्मिती भी हुई है।

"शेखर : एक जीवनी" उपन्यास में व्यक्त हुए उद्देश्य और जीवन विषयक दृष्टिकोण के संबंध में जब हम विचार करते हैं तब हमारा ध्यान सबसे पहले इस ओर जाता है कि इस उपन्यास के उपन्यासकार "अज्ञेय" के विचारों पर मनोविश्ललेषणवादी फ्रायड़ के विचारोंका बहुत बडा प्रभाव पडा है।

"अज्ञेय" जी अपने उपन्यासों में व्यक्ति की आज़ादी को अधिक महत्त्व देते हैं। सामाजिक विचारों को महत्त्व नहीं देते। "शेखर : एक जीवनी" की व्यक्तिवादिता के संबंध में हम कह सकते हैं कि समस्याओंका जो विवेचन किया है उसमें सामाजिक जीवन की चर्चा नहीं है। समस्याओंका जो चित्रण हमारे सामने आता है वह शेखर की व्यक्तिगत प्रति क्रियाएँ है।

व्यक्तिवादी विचारों में व्यक्ति को समाज का अनुयायी नहीं माना गया। इसके विपरित व्यक्ति पर थोपे गये विधि निषेध अयोग्य माने गये हैं। इतना ही नहीं व्यक्ति के जीवन को गतिशील बनानेवाली इन मूलभूत प्रेरणाओंपर व्यक्तिवादी को किसी प्रकार का बंधन मान्य नहीं, कारण बंधन तो उन मनोभावों पर ही योग्य होता है, जो अनिष्ट और अमंगल हो। और ये तो जीवन को प्रेरणा देनेवाली शक्तियाँ, इसलिए इन्हें निन्दनीय अथवा अशुभ मानना तो अयोग्य है ही, इन पर बंधन डाल देना तो बिल्कुल अन्याय है। इसलिए व्यक्तिवाद ने व्यक्ति के अहं को धक्का पहुंचानेवाले समाज के प्रतिबंधों और वर्जनाओं को अशुभ माना है, और इनकी अवहेलना में व्यक्ति के पूर्ण विकास की संभावनायें देखी हैं। थोडे में कहा जाय तो व्यक्तिवादी विचारधारा में सामाजिक विधि व्यवस्था अथवा नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। उसमें व्यक्ति की अबाध एवं मुक्त सत्ता की रक्षा की अपेक्षा की गई है।

"अज्ञेय" के जीवन विषयक विचारों पर फ्रायड़ के मानसशास्त्र और व्यक्तिवादी चिंतन की छाप पड़ी हुई है। व्यक्ति के अस्तित्व को पूरी तरह मानते हुए "अज्ञेय" भी मानव जीवन को गति देनेवाली मूल प्रेरक शक्तियाँ-अहं, भय और लिंग संबंधी बिचारों के सामने मस्तक झुकाते हैं। समाज की तुलना में व्यक्ति को अधिक महत्त्व देते हैं। इसीलिए वे व्यक्ति के अहं की प्रतिष्ठा को सबसे अधिक मान्यता देते हैं। व्यक्ति की निरपेक्ष सत्ता का भाव उनके चिंतन में इतना मुख्य हो उठा है कि वे पूरे समाज के प्रति अनासक्ति और तटस्थता का भाव लिए हुए दिखाई देते हैं। व्यक्ति की सत्ता की

तुलना में उनके लिए सामाजिक संस्थाओं, पूर्वग्रहों का थोडा भी महत्त्व नहीं है। इसलिए समाज की नीति विषयक व्यवस्था के प्रति उनमें उपेक्षा का भाव ही ज्यादातर शक्तिशाली है। व्यक्ति की अबाध सत्ता के वे पक्षधर हैं और इस पर किसी प्रकार का बाहरी हस्तक्षेप वे सहन नहीं करते।

खुद "अज्ञेय" ने अपने एक निबंध "समालोचन और नैतिक मान" में यह मान लिया है कि उच्चकोटि का सौन्दर्य विषयक बोध, कम से कम कृतिकार में दोनों एक साथ चलते हैं। क्यों? इस लिए कि दोनों बोध मूलरुप में बुध्दि के व्यापार हैं। मनुष्य का विवेक ही दोनों के मूल्य का मूल उद्गम है। इसी के साथ उन्होंने अपने कविता संग्रह "इंद्रधनुष रौंदे हुए थे" की भूमिका में कहा है, व्यक्तित्व रचनाकार के लिए केवल स्वरति नहीं, वह विकसित मानव है जो जीवन को प्रतिष्ठा दे सकने के योग्य हो एवं जो अन्यायी और कुरीतियों के विरुध्द आवाज उठा सके। वह सेतु है जो मानव के साथ मानव का हाथ मिलने से तैयार होता है। इस प्रकार "अज्ञेय" व्यक्ति तथा समष्टि का समन्वय ही उपयोगी समझते हैं।

"शेखर : एक जीवनी" में मनोवैज्ञानिकता का अधिक्य है इस कारण से बौध्दिक-जटिलता और अस्पष्टता आ गई है। उनके चरित्रोंका मुख्य आधार उनका अहं है। शेखर का कथन तो अहं भावना को ही सिध्द करता हैं," मुझे मूर्ति उतनी नहीं चाहिए, जिसकी ओर मैं देखूं, मुझे वह चाहिए, जो मेरी ओर देखे। यह नहीं कि मुझे आदर्श पुरुष नहीं चाहिए - पर उन्हें मै स्वयं बना सकता। अपने लिए ईश्वर-रचना मेरे बस में है, लेकिन मेरी ईश्वरता का पुजारी-वह नहीं---।[12] शेखर बचपन से ही अहंकारी है। उसका व्यक्तित्व अहं मान्यता पर आधारित है।

मनोविश्लेषणवादी फ्रायड़ के अनुसार मनुष्य का आचरण तीन मूलभूत प्रेरणाओं पर आधारित है। ये, तीन प्रेरणाएँ याने उसका अहं, भय तथा लैंगिक भाव। मनुष्य इन्हीं तीन प्रेरणाओं से प्रेरित होता है और जीवन के अनेक क्षेत्रों में प्रवेश करता है। ये प्ररणाएँ मनुष्य के कर्म, चिन्तन तथा भाव पर राज्य करती हैं। उसके सभी प्रयत्न इन्हीं से निर्माण होते हैं। "साथ ही फ्रायड का यह भी कहना है कि मानव अपने जन्म के साथ ही इन प्रेरणाओं से शासित होने लगता है और इन्हीं से मानव जीवन को गति प्राप्त होने के कारण इनसे किसी प्रकार का विस्तार संभव नहीं है। यदि मानव प्राणी ऐसा न करके इन मूल प्रेरणाओं के दमन का उपाय सोचेगा तो उसके जीवन में अनेक कुंठाओं, विकृतियों एवं उलझनों की ऐसी बाढ़ सी आ जायेगी कि न केवल उसके व्यक्तिगत जीवन का विकास ही स्थगित हो जाएगा अपितु वह जिस समाज में रहेगा उसका विकास भी कुंठित हो जाएगा।"[13]

व्यक्तिवाद का गहरा असर होने के कारण उनका यही मत रहा है कि मानव की अहं और लिंग संबंधी मूल प्रवृत्तियों पर बंधन न डाले जाये। वस्तुतः व्यक्ति के अहं के विकसित होने में

पूरी मानवता के विकास की संभावनाओं का आभास मिलता है। इस कारण से "अज्ञेय" ने अहं को दमित करने का पूरी तरह से विरोध किया है।

मानव की लिंग संबंधी मूल प्रवृत्ति को त्याज्य न मानकर भूख और प्यास के समान भोगेच्छा को भी जीवन की अनिवार्य आवश्यकता माना है। इसी कारण से "अज्ञेय" ने मानव जीवन की वासना उपभोग संबंधी मूलभूत आवश्यकता की पूर्णता पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण अयोग्य मानकर अबाध प्रेम तथा मुक्त भोग का समर्थन किया है। इसी प्रकार "अज्ञेय" मानव की कामवासना को नीतिविषयक नियम-निषेधों व्दारा दमित करने के पक्ष में नहीं है कारण यह तो उनकी नजर में व्यक्ति की स्वतंत्र सत्ता पर प्रहार है। इस प्रकार "शेखर: एक जीवनी के रचनाकार "अज्ञेय" के व्यक्तिवादी विचारों की आलोचना करते हुए कहा है कि, " उनके मत के अनुसार व्यक्ति की निर्बाध निरपेक्ष सत्ता है जो किसी मर्यादा मूल्य और नैतिकता के गिरफत में नहीं रहती, अपितु सर्वथा स्वतंत्र और मुक्त है।"[14]

प्रेमचंद युग के उपन्यास सामाजिक समस्या को महत्त्व देते थे। और वास्तविकता का वर्णन करते थे। साथ-साथ आदर्शवाद को भी प्रस्तुत करते थे। लेकिन इस ढंग से बिल्कुल अलग एक नया रास्ता हिन्दी उपन्यास साहित्य में यहाँ प्रस्तुत किया जाता है, "मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में जैनेन्द्रकुमार और इलाचंद्र जोशी के साथ "अज्ञेय" का नाम लिया जाता है। यद्यपि "अज्ञेय" की उपन्यास शैली कहीं अधिक गद्यकाव्यात्मक और उनकी भाषा प्रसाद के निकट, यानी संस्कृत बहुला है।"[15]

2) विद्रोह भावना का प्राबल्य-विद्रोह में सिध्दी का समर्थन :

"अज्ञेय" ने अपने उपन्यासों मे मानव जीवन की परीक्षा के लिए नई कसौटियाँ तथा उसके मूल्यांकन के लिए नई नीति विषयक मूल्यों की स्थापना की है और इसी तरह उन्होंने परंपरागत लोक व्यवहार तथा लोकनीति के विरोधी विद्रोह की भावना स्पष्ट की है। इसलिए "शेखर : एक जीवनी" में क्रांति तथा विद्रोह खुद अपना लक्ष्य है। और यह एक मनोभावना ही नहीं एक स्वतंत्र जीवन विचार भी है। तथा उपन्यासकार के मतानुसार क्रांतिकारी बनाये नहीं जाते, जन्मजात होते हैं।

विद्रोह का भाव आसानी से निर्माण नहीं होता उसमें परिस्थितियों से संघर्ष करने की शक्ति होती है। जीवन की क्रियाओं से या परिस्थितियों के आघात-प्रतिघात से भी वह निर्माण नहीं होता। वह आत्मा का एक अभिन्न अंग ही है। शेखर मानता है कि विद्रोह शक्ति निर्माण नहीं की जा सकती उसका संग्रह एवं दिशा निर्देशन अवश्य किया जा सकता है। यहाँ यह भी स्मरणीय रहे कि "शेखर : एक जीवनी" में मुख्य रुप से मध्यवर्गीय पात्रों का ही आयोजन हुआ है। उन पात्रों की विद्रोह भावना मध्यवर्गीय स्वतंत्रता के आभास पर ही टिकी हुई है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

मध्यवर्गीय व्यक्ति आर्थिक संकट के कारण अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का भी सुचारु रुप से प्रबंध नहीं कर पाते हैं। "शेखरः एक जीवनी" में शेखर का अभिन्न मित्र कुमार निर्धन था अतः पढ़ने के लिए शेखर से समय-समय पर आर्थिक सहायता लेता रहता था। शेखर इस स्थिति के लिए अपने मन का विरोध प्रकट करता है, "क्यों है गरीबी? क्यों है धन? क्यों ऐसा है कि एक आदमी, मनोरंजन की इच्छा रहने पर, सिनेमा सर्कस नहीं जा सकता, और क्यों एक दूसरा आदमी, उसका जाना संभव बनाने की सामर्थ्य रखते हुए, उसे जाने से रोक देता है।"[16]

वास्तव में प्रथम विश्वयुध्द के बाद मध्यवर्ग में शिक्षितों का जो एक अलग समूह बना उसने नवीन विज्ञान विषयक विचारों का चिंतन किया और इन्हें अपने जीवन में अपनाया और समाज के सामने नवीन आदर्श के रुप में रखा परंतु उन आदर्शों को मान्यता न मिलने पर वह सहज ही विद्रोह के लिए तैयार हो गया।

"अज्ञेय" जी व्यक्ति की सरल अस्तित्व के हिमायती हैं। सभी दिशाओं से सामाजिक बंधनों तथा सामाजिक निषेधों से जकड़े हुए व्यक्ति को देखते हैं तब सामाजिक बंधनों और निषेधों को तोडने के लिए उनमें विरोधी भावना का अधिक्य दिखाई देता है। और उन्हें व्यक्ति के व्यक्तित्व को रोकनेवाले नीतिविषयक नियम और निषेधों का अस्तित्व मान्य नहीं है। जीवन में क्या करना चाहिए बतानेवाले विचार नीतिविषयक नियम हैं। और जो नहीं करना चाहिए उसके नियमों को नीतिविषयक निषेध कहते हैं। उसी तरह प्रस्तुत नियम-निषेधों के प्रति विद्रोही भावना में व्यक्ति के विकास की संभावनायें दिखाई देती हैं। इसीलिए शेखर सामाजिक रुढिगत बंधनों के प्रति निर्माण होनेवाली विद्रोही भावना को व्यक्ति का सहजात गुण और आत्मा का एक अभिन्न अंग मानता है और व्यक्ति की निर्बाध सत्ता की रक्षा के लिए व्यक्ति का विद्रोही बनना बिल्कुल आवश्यक मानता है।

"शेखर : एक जीवनी" में व्यक्ति मन में प्रज्वलन करनेवाली विद्रोही भावना को बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है। व्यक्ति को ही सभी कुछ मानते हुए समाज के विधी-निषेध तथा संस्था रुढियों का महत्त्व में यहीं स्वीकारा गया हैं कि उनके द्वारा व्यक्ति के विकास का मार्ग और बड़ा होता है। शेखर के व्यक्तित्व में वज्र जैसी कठोरता और दृढता है। शेखर क्रांति करने के लिए लालायित है खास तौर पर साहित्यिक क्रांति के लिए। शेखर के जीने का प्रधान उद्देश्य है विद्रोह, सर्वतोमुखी क्रांति और वेदना। जीवन का अर्थ ढूँढने की कोशिश शेखर का मन बचपन से ही आरंभ कर देता है। शेखर की मूल प्रवृत्ति अंतर्मुखी है। शेखर का विद्रोह व्यक्तिगत रुप में जितना तीव्र है उतना ही तीव्र वह जीवन के बाह्य क्षेत्रों में भी दिखाई देता है। आधुनिक भारतीय व्यक्तित्व का एक मूल रुप यथार्थ में शेखर ही है।

शेखर जन्म से विद्रोही है यह हम जानते हैं, लेकिन कलाकार एक-न-एक तरह से विद्रोही होता है। पिता, परिवार, समाज, शासन, धर्म और ईश्वर से भी शेखर का विद्रोह है, किन्तु उसकी वैचारिक भूमिका उपन्यास में प्रस्तुत हुई है। "शेखर : एक जीवनी" में कथावस्तु के लिए एक विधि यह भी अपनायी गई है कि "अज्ञेय" ने अपने प्रमुख पात्र शेखर के स्वभाव का चित्रण करते हुए उसके विशिष्ट मनोभाव के उत्तरोत्तर विकास द्वारा कथा को आगे बढाया है। शेखर की विद्रोह भावना का विकास दिखाकर कथावस्तु को गति दी है और हम देखते हैं कि, "बचपन से ही विद्रोही शेखर बाल्यकाल में घर से रुठकर निकल पडता है और जब उसकी झुँझलाहट कम होती है तब वह पुनः घर लौट आता है। साथ ही अपने परिवार और माता-पिता से आरंभ होकर शेखर का विद्रोह, जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी प्रकट होता है तथा अपने अध्यापकों के आदेशों की अवहेलना करते हुए शेखर ईश्वर के प्रति भीविद्रोही बन जाता है। इतना ही नहीं शेखर की यह विद्रोह भावना समस्त सामाजिक रीति-रिवाजों और शासन के प्रति भी जागृत हो उठती है।"[17]

"शेखरः एक जीवनी" में न सिर्फ विद्रोह बुध्दि की अधिकता के दर्शन होते हैं परंतु "अज्ञेय" ने व्यक्ति में विद्यमान विद्रोह भावना को उसके स्वभाव का स्वाभाविक गुण मानकर, विद्रोह बुध्दि का अभिनंदन किया है तथा विद्रोह में ही जीवन साफल्य की शक्ति मानी है। "अज्ञेय" के इस दृष्टिकोण से स्पष्ट हो जाता है कि विद्रोह उनके उपन्यासों की एक भावभूमि है और आधुनिक उपन्यास साहित्य में स्वातंत्र्य आंदोलन की पीठिका पर रची हुई अनेक विद्रोह भावनाएँ सबसे अधिक रुप में "शेखर : एक जीवनी" में ही व्याप्त हैं। और अज्ञेय के बाकी दोनों उपन्यासों में इसका आकर्षित करनेवाला रुप नहीं दिखाई देता। सच तो यह है कि "शेखर : एक जीवनी" का शेखर इस विद्रोह भावना से पूरी तरह व्याप्त ही नहीं परंतु उसी से निर्मित है और उसका विद्रोह कोई आच्छादन न होकर उसकी आत्मा में ही भरा हुआ है तथा उसका यही विश्वास है कि विद्रोही बनते नहीं उत्पन्न होते हैं।

प्रस्थापित विचारोंका विरोध, गर्व, बुध्दिमानी को महत्त्व देना, लैंगिकता, संवेदनशीलता तथा दबे हुए भाव इत्यादि शेखर की विशेष प्रकार की मन की वृत्तियाँ हैं," जिज्ञासुवृत्ति का होने के कारण शेखर के मस्तिष्क में ईश्वर के अस्तित्व, मानव जन्म तथा यहाँ तक कि अपने खुद के अस्तित्व को लेकर अनेक तरह की जिज्ञासाएँ जन्म लेती हैं और यही जिज्ञासाएँ उचित समाधानों के अभाव में ग्रंथियों का रुप ग्रहण कर लेती हैं। शेखर को विद्रोही बनाने में इन ग्रंथियों का प्रमुखतम स्थान है।"[18]

मानसिक संघर्ष की क्रिया बौध्दिकता से संचालित होते हुए भी वह केवल इस बौध्दिकता से ही विद्रोही नहीं बनता। इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि "शेखर : एक जीवनी" के निर्माता ने विद्रोह भावना के विकास के साथ-साथ शेखर का जीवन भी विकसित किया है। उसी तरह उसमें

अपने परिवार के प्रति विद्रोह, समाज की सभी मान्यताओं तथा सीमाओं के प्रति उच्च विद्रोह का रूप धारण कर लेता है। हो सकता है शेखर के जीवन की सफलता की शक्ति इस विद्रोह भावना को अधिक बलशाली करने में ही होने के कारण उपन्यासकारने अपनी कृति के अंत में शेखर को हताश न दिखाकर उसे फिर जीवन से टक्कर लेने के लिए अपनी शक्ति एकत्रित करते हुए दिखाया है।

विद्रोह भावना शेखर के जीवन की अंदरुनी शक्ति है। इसी शक्ति के कारण उसका निर्माण और विकास हुआ है। लेखक भी इस विद्रोह शक्ति का समर्थन करता है।

3. प्रेम की नवीन नैतिकता एवं आत्मपीड़ा का चित्रण :-

"अज्ञेय" के उपन्यासों मे वर्णित प्रेम भावना पर फ्राइड की प्रेमभावना का पूरी तरह से प्रभाव पड़ा है। फ्राइड़ के अनुसार प्रेम लैंगिक भावना का दूसरा नाम नहीं है। उसी तरह पूरे जीवन का केन्द्र लैंगिक भावना नहीं है। प्रेम इसके विरुध्द है।प्रेम में तल्लीन दो प्राणी अपने अहं को समाप्त करके जो पूर्ण एकात्मता प्राप्त होती वह प्रेम का पर्याय है। प्रेम ही एक ऐसी क्रिया है जो व्यक्ति को स्वकेन्द्रित घेरे से अलग कर अहं की समाप्ति द्वारा बाहरी जगत से संबंध स्थापित कराती है। प्रेम की परिपक्वता तक पहुँचने के सिलसिले में यौन भावना को अटल स्तर के रुप में स्वीकार किया है। और यहाँ मनुष्य के अचेतन मन को बडी हद तक निर्णायक शक्ति कहा है। फ्राइड़ की इस यौन बुध्दि का प्रारंभ जन्म के साथ ही होता है परंतु इस सहजात यौन बुध्दि के साथ-साथ अन्य सहयोगी प्रवृत्तियों को भी बहुत महत्त्वपूर्ण समझते हैं। प्रेम के अंदर तिरस्कार और आक्रमकता का विचार भी समान रूप में चलता रहता है। इसके संबंध में फ्राइड़ ने प्रेम की असामान्य मनोवृत्तियाँ, आत्मपीड़ा, पर-पीड़ा और आक्रामकता इत्यादि की परिभाषाएँ भी बनाई हैं।

"शेखर : एक जीवनी" के साथ प्रथम ही हिन्दी उपन्यास में प्रेम के विश्लेषण-विवेचन का प्रारंभ हुआ। साथ ही प्रेम की नवीन मौलिकता तथा आत्मपीड़ा का विचार प्रवाह भी शुरू हुआ। वास्तव में "शेखर : एक जीवनी" का केन्द्र बिन्दु तथा चरित्र नायक शेखर हिन्दी उपन्यास साहित्य में विभाजित व्यक्तित्व का प्रथम नायक है। विभाजित व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रभाव शेखर की प्रेम संवेदना पर भी दिखाई देता है। शेखर को प्रेम की संवेदना से रोमाँसवाद तथा भावुकतावाद नामक दो छोरों पर स्थित देखते हैं, जब उसके अंतर का अपना विभाजन तथा क्रियाहीन तनाव उसे तथ्यहीन बनाता रहता है।

स्वच्छन्दवादी प्रियकर के लक्षण शेखर में अधिक मात्रा में दिखाई देते हैं। श्रीनगर के परिमल के खंडहरों में पहुँचकर उसे सौन्दर्य का अलौकिक अनुभव मिलता है, जो अपने व्यक्तित्व में वास्तव में अद्भूत प्रेममय है। "शेखर : एक जीवनी" का दूसरा महत्वपर्ण और प्रभाव डालनेवाला "शशि" नामक पात्र है। यह पात्र जितना प्रेममयी है उतना ही त्यागमयी भी है, "शशि ही शेखर के

निर्माण में उत्सर्ग कर देती है और इसी आत्मोत्सर्ग में वह नारीत्व की सिध्दि प्राप्त कराती है। शशि का यह त्याग ही शेखर के अहं का परिष्कार एवं उसकी विद्रोह भावना को सही दिशा देने में समर्थ होता है और शेखर में "शील विकास" का जन्म होता है।"[19]

शेखर के जीवन को उन दिनों संभव बनाया घृणा ने ही। उसे इतनी शक्ति दी कि उसने अपना सभी कुछ खोकर भी दुनिया को ललकारा और वासना ने उसे जागृत रखा कि वह उस आघात का सामना करे, जो उसके हृदय को पहुँचा है। इतना होते हुए भी एक भावप्रधान तथा संवदेनशील व्यक्ति के रूप में शेखर को प्रेम की आवश्यकता मालूम होती है कारण उसे मालूम है कि सिर्फ घृणा की सहायता से जीवित नहीं रहा जाता। इसके साथ शेखर ने यह भी सूचित किया है कि उसका समूचा जीवन अविश्वास की प्रतिक्रिया है। अविश्वास की प्रतिक्रिया में जीवन ही ध्वस्त होता है और जीवित रहना कठीन हो जाता है। इसी कारण से "शेखर : एक जीवनी" में चित्रित शेखर के जीवन चरित्र में हम शेखर में अपना जीवन ध्वस्त करने की प्रवृत्ति ही विशेष रूप में देखते हैं और वह अनेक बार अपना जीवन ध्वस्त करने का प्रयास भी करता है।

अपने में खंडित विचारोंवाला व्यक्ति विशेष रूप में आत्मकेंद्रित होता है और आत्मकेंद्रितता आत्म विवेचन की ताकद को बढ़ावा देती है। लेकिन एक ही दिशा में प्रयत्नशील रहने की शक्ति को भी नष्ट करती है। इसी वजह से शेखर अपने को प्रेम में असमर्थ मानता है। और अपने हृदय की प्रेममय कल्पना के प्रति क्षोभ भी दिखाता है। परंतु अधिक आत्मकेंद्रित तथा भावुक होने के कारण अपनी प्रेम-धारणा-यथार्थ की खोज में स्वच्छन्दतावादी प्रेम का आधार लेता है। इसी तरह प्रभावशाली असमझौतावादी स्वभाव के कारण शेखर की प्रेमभावना, पलायनवाद और पीड़ावाद से प्रभावित है। प्रत्येक जगह शेखर पराजित होता है, थक जाता है, ऊब जाता है और प्रेम में इन सभी से मुक्त होना चाहता है। इसी वजह से प्रेम उसके लिए मात्र लेने की वस्तु है देने की नहीं। वह प्यार को किसीसे माँगता ही रहा है, प्यार देना उसे मालूम ही नहीं। शेखर ने शशि के प्रेम का महत्त्व माना है और उसका प्रकटीकरण भी किया है। इसका एक ही कारण शशि है, जो उसे हमेशा आश्रय देती है और टूट जाती है। "रोमांटिक आऊटसायडर की ये स्थितियाँ, खासकर कल्पना की दुनिया में विचरण, सौन्दर्य की खोज, सत्य के लिए दृढ चाह उसे इस दुनिया से विद्रोही बनवा देती है। ईश्वर, समाज, परिवार, संसार, वर्तमान व्यवस्था किसी से भी उसका तादात्म्य नहीं हो पाता।"[20]

हिन्दी उपन्यास जगत् में शशि और शेखर के संबंधों पर विभिन्न प्रकार की आलोचना की गई है। नैतिक दृष्टि से कुछ आलोचकों ने इस संबंध पर आपत्ति उठाई है। शशि और शेखर में भाई बहन का रिश्ता है, लेकिन उनका संबंध अधिक नजदिक का एवं मधुर है।

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

शेखर का जीवन निर्माण करनेवाली प्रवृत्ति घृणा नहीं है प्रेम की कमी है। अंतर्मुखी किशोर शेखर के सामने सबसे बड़ी समस्या उसका अकेलापन है और वह उसका स्वभाव घोंघे की तरह है। अकेलेपन को दूर करनेवाले प्रेम की तलाश में शेखर को सबसे पहले उसकी बड़ी बहन सरस्वति मिलतीहै। शेखर सरस्वति को अकेली पाकर उससे निर्बाध बातें करने लगता है। वह ऐसा आनंद था जो इस बात का जवाब न पाकर भी सिर्फ यही जानने में था कि सरस्वति ने उसकी बात सुनी है। इस प्रकार यह था शेखर का पहला आराधक आराध्य का एकत्रित प्रेम परंतु सरस्वति की शादी के बाद शेखर फिर अकेला रह जाता है। लेकिन सरस्वति के प्रति शेखर के आकर्षण की प्रक्रिया का निरूपण एकदम स्वाभाविक है। शेखर की प्रबल कामवृत्ति, जो उसके अहं का ही एक रूप है, इसमें प्रतिफलित है।

प्रेम की तलाश में शेखर को सरस्वति के बाद शारदा मिलती है। लेकिन सरस्वति तथा शारदा के बीच किशोर शेखर के मन में प्रेम की जो अबूझ और उत्कट तृष्णा है उसे एक अंग्रेजी कविता की इन दो पंक्तियों के द्वारा व्यक्त किया है -

"A lad there is, and I am that poor grom,
That's fallen in love and knows not with whom."[21]
(एक व्यक्ति है - और मैं ही वह अभागा हूँ - जो प्रेम करता है और जानता नहीं कि किससे)

शारदा का प्रवेश शेखर की किशोर अवस्था के बीच होता है। एक किशोर के मन में नारी के प्रति जो सहजात आकर्षण होता है उसका उदय कैसे होता है, वह शारदा के सन्दर्भ में चित्रित किया गया है। सरस्वति के जाने के बाद शेखर अकेलापन का अनुभव करता है। जन्म, मृत्यु, ईश्वर आदि को लेकर अनेक प्रश्नों का अंधकार उसे घेरे रहता है उसी समय, "इस अंधकार के पट पर बिजली की तरह थिरकती हुई आयी एक रेखा - शारदा।"[22]

प्रेम की इस दिशाहीन अप्रकट अनुभूति के कारण शेखर बार-बार उतावला हो जाता है परंतु वह समझता नहीं कि वह चाहता क्या है और खुद को तुच्छ समझकर बिना कारण परेशान रहता है। 'शेखर : एक जीवनी' के द्वारा रोमांटिक प्रेम का अभूतपूर्व प्रकटीकरण भी हुआ है। लेकिन शारदा के द्वारा शेखर प्रेम के रहस्य तथा आकर्षण का अनुभव करता है, उसके सही रूप का नहीं। प्रेम की वास्तविकता का ज्ञान हो जाने के बाद भी शेखर अपने व्यक्तित्व के आसपास के रोमांटिक जाल से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाता और जब वह कॉलेज में पढ़ने के लिए मद्रास जाता है तब फिर वह प्रेम योग्य व्यक्ति को प्राप्त करने के मोह और प्रेम में सिर्फ एक ही मालिक बनने की इच्छा से हमेशा त्रस्त दिखाई देता है।

वैयक्तिक जीवन में शेखर का प्रेम असमर्थ और असफल हो जाता है। यही असमर्थता और

असफलता शेखर को मानवता और समाज सुधार की ओर ले जाती है। लेकिन उसके व्यक्तित्व की ग्रंथियाँ और दमित भावनाएँ उसे वहाँ भी सफल नहीं होने देतीं और इसी समय उसकी शारदा से अचानक भेंट हो जाती है। वह उसके सामने स्पष्ट शब्दों में प्रेम व्यक्त करता है और उसकी कलाइयों को पकड़ लेता है। लेकिन रोष और आँसूओं से रूँधे स्वर से शारदा कहती है, "तुम्हें? प्यार? मुझे खेद है कि मैंने तुमसे कभी बात भी की।"[23] शारदा ने अपना हाथ छुड़ा लिया और अपनी कलाइयों पर शेखर की उँगलियों के निशान की ओर देखकर घर चली गई। शेखर के प्रेमी हृदय को फिर धक्का पहुँचता है और इस धक्के के साथ उसके किशोर प्रेम की तलाश भी समाप्त हो जाती है। और शेखर से मद्रास भी छूट जाता है। इसीलिए "शेखर : एक जीवनी" दूसरे हिस्से में प्रेम के खोज की एक नयी यात्रा की शुरूआत होती है परंतु प्रेम के बारे में शेखर का मोह कभी खंडित नहीं होता। वह अपने जीवन में सदैव रोमाँसवादी संवेदना से ही परिचालित होता है।

"शेखर : एक जीवनी" के दूसरे खंड में शेखर प्रेम तथा स्त्री संबंधी दो विचार-प्रवाहों से संघर्ष करता है और दोनों विचार-प्रवाहों से भी उसे आघात पहुँचता है। दो विचार-प्रवाहों से पहला है शरीर आकर्षण और दूसरा धन का आकर्षण। इनमें से विचार-प्रवाह यह है कि, "प्रेम वेम कुछ नहीं है। शरीर है और बुध्दि है - एक शरीर को पकड़ता है और एक पैसे को, बस यही तो प्रेम है।"[24] शेखर को यह मालूम हुआ कि इस विचार-प्रवाह के लोग छुपकर शराब पीते हैं और वेश्यागमन करते हैं तब वह जल्दी ही इस विचार-प्रवाह के साथियों से अलग हुआ। दूसरे विचार प्रवाह में शेखर ने कभी स्त्रियों की चर्चा नहीं सुनी, "इस दल की सारी चिन्ता मानो सभ्यता की धुरी है, नारी सभ्यता का केन्द्र है, नारी यह है और वह है...।"[25] इसका कारण यही था कि इस दल के सदस्यों में एक ही स्त्री थी और वही इस दल की नेत्री थी। अब वह मणिका से परिचित होता है और वह एक दिन उसे बतलाती है कि, " I collect men!"[26] (मैं तो पुरूषों का संग्रह करती हूँ) इसी तरह प्रेम की तलाश में असफल शेखर अब सौन्दर्य की तलाश में भटकता है और निसर्ग में सौन्दर्य की तलाश करता है।

प्रेम और सौन्दर्य के साथ शेखर को पीड़ा और विश्वास की भी तलाश थी। उसके प्रेम में सौन्दर्य, पीड़ा तथा विश्वास तीनों एकरूप हो जाते हैं। शशि और शेखर का प्रेम इस पीड़ा और विश्वास की मदद से ही फलता-फूलता है। शेखर की प्रणय बुध्दि उसके जीवन संग्राम से जुड़ी हुई है लेकिन इस संग्राम के एक स्तर पर सामाजिक द्वन्द्व है और दूसरे स्तर पर सत्य का अनुभव होने की तलाश। इसी तरह संबंधों के मूल तक पहुँचने की तलाश है। इसलिए उसे पीडा इस संग्राम में हारने तथा इस खोज में असफल होने की है। फिर भी विश्वास इस संग्राम और तलाश में फिर एक बार आगे बढ़ने को प्रेरित करता है।

शेखर के जीवन में शशि का प्रवेश किशोर अवस्था में हुआ था, जब उसने शशि के सिर पर लोटा दे मारा था। किन्तु जब शेखर लाहौर पढ़ने के लिए जाता है तब शशि का परिचय गहरा होता है। शेखर यदि अपने जीवन में कोई अर्थ या संगति पाता है तो एक शशि से और बाबा मदनसिंह से। बाबा मदनसिंह ने शेखर को जेल जीवन में एक सूत्र दिया था, "अभिमान से भी बड़ा दर्द होता है, पर दर्द से भी बड़ा एक विश्वास है...."[27] शशि शेखर से कहती है कि मैं एक दिन नहीं रहूँगी, तुम एक दिन बड़े आदमी बनोगे और कंपोजोटर तुम्हारी मेज के पास खड़े रहेंगे और तुम्हारे हाथ से कागज छीनकर ले जाएँगे। अगर तुम अच्छा नहीं लिखोगे, तो मैं तुम्हारे कान में चिल्ला दूँगी, दर्द से बड़ी एक लाचारी होती है - जितना बड़ा दर्द, उतनी ही बड़ी - नहीं तो दर्द के सामने जीवन हमेशा हार जाए।"[28] उपन्यास में दर्द की जो व्याख्या है इससे लगता है कि शशि का चरित्र शेखर पर अधिक प्रभाव छोड़ जाता है।

शशि शेखर का साहित्यादर्श बनती है। शेखर का ग्रंथ पूरा होता है लेकिन अब दूसरे मोर्चे पर संघर्ष शुरू है - वह मोर्चा है प्रकाशन का। उस एकाकीपन में सोचता है "बहिर्मुख शक्ति ही क्रांति कर सकती है, अन्तर्मुखी नहीं। अन्तर्मुखी होकर वह एक विशेष प्रकार का कवि चाहे हो जाए।"[29] एक विषाद की छाया शेखर को आवृत्त कर लेती है। शशि के प्रेम का अनुभव शेखर को आश्वस्त करता है। शशि अपने पति से प्रताड़ित और घर से निष्कासित होकर शेखर के कमरे में भग्नांश होकर आती है।

शेखर की अतिशय भावुकता खुद पर एक प्रकार की असामान्यता ढो लेती है और इस थोपी गई असामान्यता के कारण ही शेखर पुनः पुन्हा असफल भी होता है। लेकिन उसका प्रेम इस असामान्यता के अंदर से ही निर्माण होता है। इसलिए सभी से टूटनेवाला शेखर अंत में सिर्फ शशि का बनकर रह जाता है।

वास्तविक शेखर को शशि के प्रेम में अपनी एकांतता तथा निष्प्रयोजनता के अनुभव से मुक्तता मिलती है और उसके छिन्न हृदय को शशि के कारण ही आनंद मिलता है। लेकिन वह शेखर को बचाने तथा विकसित करने में खुद नष्ट हो जाती है। परंतु इस आत्मसमर्पण में वह अपने स्त्रीत्व की शक्ति पर संतुष्ट होती है। फिर भी शेखर में धीरज बँधाने में शशि खुद उध्वस्त हो जाती है और वही ज्यादा उध्वस्त होती भी है। लेकिन दमित शेखर को अपने पर शशि के अर्पित होने में प्रथम बार अपने व्यक्तित्व की अर्थपूर्णता दिखाई देती है। इसीलिए शेखर के व्यक्तित्व को अर्थ प्राप्त कराकर शशि का प्रेम उसे निर्माण करता है और इस प्रेम का रूपांतर शशि की मृत्यु में ही होता है। ऐसा होते हुए भी उसका शेखर के जीवन को निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

"शेखर : एक जीवनी" में एक प्रकार से रोमांटिक जीवन विषयक विचार की निर्मिती की है और शेखर की प्रेम धारणा को दर्द, यातना, दुःख तथा मरण आदि अनगिनत रोमांटिक प्रतिछाया से पूर्ण करने की ओर ध्यान दिया है। शेखर के अपने दर्द के अलग-अलग अंगों का रेखांकन करने की ओर लेखक का ध्यान गया है।

शेखर में अहंकार का आधिक्य है परंतु अपना चरित्र लिखते समय वह झूठ गर्व से बहुत दूर है। वह अपनी माँ के प्रति नफ़रत का भाव व्यक्त करता है और पिता की कमजोरियों को स्पष्ट करता है। वह बिना हिचकते अपनी बहन के प्रति अपनी आकर्षण की बात लिख देता है, कुमार के प्रति वही करता है। शशि के प्रेम की बात को भी दबाकर नहीं रखता। इसी प्रामाणिकता और सच्चाई के कारण हम उसके प्रति आकृष्ट होते हैं। शेखर का आज़ादी का भाव भी शक्तिशाली है। अपने माता, पिता, कुटुंब, समाज या राज्य का विरोधी रहकर भी वह अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करता है। स्वतंत्रता के लिए सब कुछ का त्याग किया जाता है, और उसीके लिए बहुत बड़ा संघर्ष किया जा सकता है। शेखर खुद का पहरेदार है। वह अपनी आत्मा की खोज करनेवाला है। शेखर में कुछ दोष भी हैं परंतु वह अपने दोषों को जानता है। "वह जैसा कि 'अज्ञेय' ने कहा है, 'जागरूक' आत्मा है। वास्तव में शेखर के द्वारा आधुनिक अहं (Modern ego) का प्रथम साक्ष्य हिन्दी उपन्यास साहित्य में 'शेखर : एक जीवनी' में मिलता है।"[30]

4. समसामयिक समस्याओं की अभिव्यक्ति :-

"अज्ञेय" का व्यक्तिवादी जीवन विषयक विचारों पर जबरदस्त प्रेम रहा है। उन्होंने अपने उपन्यास "शेखर : एक जीवनी" में व्यक्तिवाद की ही स्थापना की है। "शेखर : एक जीवनी" की कथा आजादी के पहले भारत के तत्कालीन वातावरण से जुडी हुई है, वह मध्यवर्ग की समस्याओं की जीवंतता चित्रांकित करनेवाला वातावरण ही है। "शेखर : एक जीवनी" का नायक सिर्फ मध्य वर्ग व्यक्ति का ही नहीं, मध्यवर्ग समाज का भी उसमें आभास मिलता है।

शेखर के मन बहलाव के लिए घर में एक तोता रखा गया था। वह पिंजड़े से उड़कर चला जाता है। उसके मुक्त होने पर शेखर आनंदित होता है और आगे इसी तरह पिंजड़े में बंद करके पंछियों को न पालने की इच्छा व्यक्त करता है। शेखर जाति-पाति के बंधनों को भी नहीं मानता। जाति भेद के प्रति उसके मन में विद्रोह का भाव है। नीचली जाति की स्वाभिमानी बाल विधवा फूलाँ के घर बालक शेखर को जाने और उसके साथ खेलने और खाने के लिए विरोध किया जाता है। इस समय वह उसके दुःखों का अनुभव करता है। शेखर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को मानता है परंतु समाज की कथित "सामाजिकता" को स्वीकार नहीं करता।

शेखर में दयालू वृत्ति, सहानुभूति और संवेदनशीलता भी है। वह दरिद्री कुटुंब के बच्चों के प्रति दयालू हो उठता है। वह उन्हें खिलौने और फल भी देता है। जिनमें ये चिजे पाने की शक्ति नहीं होती। शेखर मद्रास के एक कॉलेज में पढ़ाई कर रहा था तब वह मलबार प्रदेश की यात्रा यह जानने के लिए करता है कि अस्पृश्यों पर ब्राह्मणों के द्वारा किये जानेवाले अत्याचार का अनुभव खुद करें। वहाँ इस अत्याचार से पीड़ित महिला को अपनी पीठ पर लेकर अस्पताल में पहुँचाता है। इस तरह का संवेदनशील शेखर एक पीड़ित महिला को रेलगाडी पर चढ़ाने के लिए मदद करता है। इसके लिए एक अधगोरे से झगड़ा करके मारपीट भी करता है। इस प्रकार अस्पृश्यों की शिक्षा के लिए अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर रात्री की पाठशाला की स्थापना करता है और बड़े जोर से पढ़ाने का कार्य करता है।

शेखर का विद्रोह तथा आत्मपीड़ा ये दोनों भी उसके निकम्मे व्यक्तित्व के अंग हैं। वह विद्रोही है, वह क्रांतिकारी नहीं, वह ट्रॉटस्की का अनुयायी और स्टॅलिन का समीक्षक है। यह आरोप उचित नहीं लगता। शेखर हमारे सामने एक निठ्ठले व्यक्ति के रूपमें नहीं आता। एक जोशिले व्यक्ति के रूप में ही हमारे सामने आता है। वह मध्यवर्गीय परंपराओं को तोड़ने के लिए व्याकुल दिखाई देता है। शेखर दुःख के विचार तत्त्व का प्रचार करनेवाला न होकर दुःख को शक्ति के रूप में बदलनेवाला व्यक्ति है।

"शेखर : एक जीवनी" में प्रेम तथा विवाह की समस्या का वर्णन भी आ गया है। शेखर के जीवन में अनेक स्त्रियाँ आती है। परंतु शशि के बिना अन्य किसी स्त्री के प्रति उसके मन में प्रेम की भावना स्थिर नहीं हो पाती। शीला, शांति, शारदा, प्रतिभा और शशि इन में से सिर्फ शशि ही उसके मन के नजदिक है कारण वह आत्मसमर्पण का भाव लेकर उसकी जिंदगी में आती है। शशि और शेखर के द्वारा प्रेम तथा सामाजिक नैतिकता की समस्या भी चित्रित हुई है। शेखर तथा शशि का प्रेम संबंध समस्या इसलिए बनता है कि शशि शादी शुदा है और शेखर से प्रेम करती है फिर भी दोनों में नैतिकता का साहस नहीं है। और हो सकता है इसी कारण से दोनों में नैतिक साहस नहीं है और इसी कारण से दोनों पति-पत्नी नहीं हो पाते। मध्यवर्ग के शादी तथा पति-पत्नी के जीवन की समस्या को "अज्ञेय" ने शशि तथा रामेश्वर के द्वारा चित्रित किया है। "शेखर : एक जीवनी" में शशि का शादी शुदा जीवन संतोष से भरा हुआ नहीं है। और पति रामेश्वर के बुरे व्यवहार से शशि को घर त्यागना पड़ता है। वह पति के द्वारा अपमानित होती है और शेखर के घर जाती है। पति से त्यागी हुई, कलंक लगी हुई और अपमानित शशि की सामाजिक जिम्मेदारी शेखर खुद पर ले लेता है।

"अज्ञेय" के उपन्यास "शेखर : एक जीवनी" में कुछ स्थानों पर मध्यवर्ग की आर्थिक

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

समस्याएँ भी सूचित हुई हैं। और हम यह भी देखते हैं कि शेखर के पिताजी उच्चमध्यवर्ग के व्यक्ति है, लेकिन शेखर की आर्थिक अवस्था सामान्य निम्नवर्ग से ऊपर की नहीं हो जाती। शेखर अपने माँ-बाप के सपनों के अनुसार बॅरिस्टर तो नहीं हो जाता और न इंजिनियर, वह साहित्यिक क्षेत्र चुनकर लेखक बनता है। उसके पिता को उसका लेखक बनना पसंद नहीं आता। वह साहित्य द्वारा समाज में क्रांति लाना चाहता है।

"शेखर : एक जीवनी" में तत्कालीन राजनीति विषयक परिस्थितियाँ तथा समस्याओं का भी अंकन हुआ है और उपन्यास का नायक शेखर परतंत्र भारत में उस समय जन्मा था जब असहकार का आंदोलन तीव्र गति से चल रहा था। शेखर के बचपन से ही विदेशी वस्तुओं के प्रति तिरस्कार संचारित होने लगा और वह अपना वेश, आचार-विचार तथा भाषा आदि सभी में भारतीयता अपनाता है। कारागृह में वह बाबा मदनसिंह और मोहसिन से जीवन के बारे में बहुत कुछ सीखता है। कारागृह से मुक्त होने पर वह राजनीति से उदासिन हो जाता है। शेखर का पूरा राजनैतिक जीवन सदैव बदलता जाता है और वह कभी गांधीवाद से प्रभावित होता है, तो कभी विद्रोहियों से। इसी तरह उसके जीवन में उस समय की मध्यवर्गीय युवकों की बदलनेवाली राजनैतिक मान्यताएँ, प्रभाव तथा हालचालों की विविधता को देखा जा सकता है।

"शेखर : एक जीवनी" में उस समय के मध्यवर्गीय युवकों का धर्म संबंधी विश्वास तथा मान्यताओं का वर्णन दिखाई देता है। शेखर बचपन से ही निरीश्वरवादी है और उसे ईश्वर से इसलिए रूचि नहीं है कि वह हर भली-बुरी बात रचनात्मक, प्रेरणादायी तथा पोषण करनेवाला है। बुराई के लिए जिम्मेदार ईश्वर है और उसमें निरीश्वरवाद का भाव सदैव बढ़ता ही जाता है।

अगर सच देखा जाय तो "शेखर : एक जीवनी" का अंत विचित्र और अहंकार से भरे शेखर के साथ नहीं होता। अंत में वह एक आत्मविश्वासी, नम्रता से भरा, शक्ति से परिपूर्ण तथा राष्ट्र की भलाई के लिए आगे बढ़ता हुआ क्रांतिकारी शेखर दिखाई देता है। इसमें कोई शंका नहीं कि शेखर एक गतिशील पात्र है और वह सामाजिक संघर्ष से पीड़ित, पढ़े-लिखे मध्यवर्ग का प्रतीक है।

"शेखर : एक जीवनी" का नायक शेखर बचपन से युवक बनने तक के काल में अंधविश्वास और रूढ़िगत विचारों का विरोध करनेवाला मध्यवर्गीय गतिशील विचारप्रवाह का अत्यन्त शक्तिशाली प्रतिनिधि है। इस तरह इस उपन्यास के द्वारा मध्यवर्ग की अलग-अलग समाज विषयक, अर्थ विषयक, राजनीति और धर्म संबंधी समस्याओं को भी चित्रित किया गया है। परंतु हम "शेखर : एक जीवनी" इस उपन्यास को किसी विचारों का प्रचार करनेवाला नहीं मानते। इतना निश्चित है कि शेखर मुख्य रूप में व्यक्तिवादी ही है। उसका व्यक्तित्व समाज के सभी अंगों में सबसे आगे है ऐसा दिखाई

देता है। समाज एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को रौंद डालता है और व्यक्ति के विकास में रोडे अटकाता है। शेखर सामाजिक संकुचित विचार, मानमान्यता रूढ़ी और अंधविश्वासों के प्रति विरोध प्रकट करता है। इसीलिए अगर मध्यवर्ग का अध्ययन करना है तो "अज्ञेय" का "शेखर : एक जीवनी" उपन्यास बिल्कुल महत्त्वपूर्ण है। और इस उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन-प्रणाली को चित्रित करने में लेखक सफल भी हुआ है।

निष्कर्ष :-

प्रेमचंद के बाद जो मनोवैज्ञानिक उपन्यास लिखे गये उनमें जो उद्देश्य प्रकट हुए हैं उनमें तटस्थता दिखाई देती है। यह तटस्थता "शेखर : एक जीवनी" में स्पष्ट हुई है। फिर भी "शेखर : एक जीवनी" की प्रेरणा आदर्शवादी और वैज्ञानिक है। जीवनी विकास की दृष्टि से यह प्रेरणा गहरी नहीं है। अंत में इसके नायक की किसी उच्च उद्देश्य के प्रति कोई आस्था नहीं रही है। "अज्ञेय" जी नास्तिक बुध्दिवादी है, उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक और बौध्दिक है। ये पूरी तरह से नास्तिक और बुध्दिवादी है। इसी कारण से "शेखर : एक जीवनी" अभूतपूर्व उपन्यास बन गया है। "अज्ञेय"जी की तरह मन की गुफा में इतनी गहराई तक प्रवेश करनेवाला दूसरा उपन्यासकार हिन्दी में पैदा नहीं हुआ।

"शेखर : एक जीवनी" उपन्यास में वैयक्तिक स्वतंत्रता से व्यक्ति विकास की ओर निर्देश किया है। व्यक्ति विकास का आधार समाज भी है। व्यक्ति को समाज से बिल्कुल अलग रखना भी कठीन है। व्यक्ति विकास के लिए सामाजिक परंपराएँ अड़चनें बनती हैं। व्यक्ति विकास का नया रास्ता तैयार करना है तो बाधाएँ भी मार्ग में खड़ी हो सकती हैं। "शेखर : एक जीवनी" पर फ्राइड़ के मनोविज्ञान का प्रभाव बराबर दिखाई देता है।

"शेखर : एक जीवनी" में "अज्ञेय" ने जिस तरह से शेखर के शिशुकालीन भय का निराकरण करवाया है वह सिर्फ किताबी मनोविज्ञान बनकर ही रह गया है। बालक के मन पर माँ-बाप के प्रभावों के वर्णन में भी "अज्ञेय" को पूर्ण सफलता नहीं मिली है।

"शेखर: एक जीवनी" का उद्देश्य व्यक्ति स्वातंत्र्य की खोज है, इसीलिए इसका नायक सारी परंपराओं को तिलांजलि देकर - वे परंपरायें चाहे सामाजिक हैं और चाहे वैचारिक - व्यक्ति की स्वतंत्रता की खोज में आजीवन भटकता रहता है। अपने बाल्यकाल में, जब बालक पर पारिवारिक मर्यादाएँ लदी होती हैं, वह अपने माँ-बाप के प्रति विद्रोह करता है, पारिवारिक मर्यादाओं को नकारता है, और अनेक प्रकार की शारीरिक यंत्रणाओं को सहकर भी वह इन्हें नहीं स्वीकारता। जब वह युवा हो जाता है तो सामाजिक बन्धनों के प्रति विद्रोह करता है। वह सामाजिक आचार-संहिता को भी नकारता है और विदेशी शासन की प्रभु-सत्ता को भी। फलतः क्रांतिकारी के रूप में

उसे अनेक प्रकार की आपदाओं का सामना करना पड़ता है, और अंत में वह फाँसी का भागी बनता है।

"शेखर : एक जीवनी" में तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवेशों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। इस उपन्यास में जिस पारिवारिक परिवेश का चित्रण है, वह मध्यम कोटि का परिवार है।

०००

संदर्भ :-

1. शेखर : एक जीवनी - 'अज्ञेय' प्रथम भाग, भूमिका, प्र.सं. 1984, पृ. 8
2. अज्ञेय की औपन्यासिक कृतियाँ - कुसुम त्रिवेदी, सं. 1976, पृ. 33
3. हिन्दी उपन्यास : महाकाव्य के स्वर - डॉ.शान्तिस्वरूप गुप्त, सं. 1978, पृ. 48-49
4. हिन्दी के महाकाव्यात्मक उपन्यास - डॉ. शंकर वसंत मुदगल, प्र.सं. 1992, पृ. 217
5. शेखर : एक जीवनी - 'अज्ञेय' प्रथम भाग, प्र.सं. 1984, पृ. 89
6. वही, पृ. 179
7. वही, पृ. 227
8. शेखर : एक जीवनी - 'अज्ञेय' द्वितीय भाग, प्र.सं.1984, पृ. 39
9. वही, पृ. 53
10. वही, पृ. 161
11. वही, पृ. 245
12. शेखर : एक जीवनी - 'अज्ञेय' प्रथम भाग, प्र.सं. 1984, पृ. 132
13. अज्ञेय का उपन्यास साहित्य - डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र, सं. 1976, पृ. 276
14. वही, पृ. 281 पर उध्दृत
15. हिन्दी के साहित्य निर्माता 'अज्ञेय' - प्रभाकर माचवे, सं. 1991, पृ. 54
16. शेखर : एक जीवनी - 'अज्ञेय' प्रथम भाग, प्र.सं. 1984, पृ. 192
17. अज्ञेय का उपन्यास साहित्य - डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र, सं. 1976, पृ. 106
18. अज्ञेय की औपन्यासिक कृतियाँ - कुसुम त्रिवेदी, सं. 1976, पृ. 39-40
19. वही, पृ. 40
20. आधुनिक हिन्दी उपन्यास और अजनबीपन - विद्याशंकर राय, सं. 1988, पृ. 78
21. शेखर : एक जीवनी - 'अज्ञेय' प्रथम भाग, प्र.सं. 1984, पृ. 141
22. वही, पृ. 147
23. वही, पृ. 227
24. शेखर : एक जीवनी - 'अज्ञेय' द्वितीय भाग, प्र.सं. 1984, पृ. 8
25. वही, पृ. 9
26. वही, पृ. 13
27. वही, पृ. 93

28. शेखर : एक जीवनी - 'अज्ञेय' द्वितीय भाग, प्र.सं. 1984, पृ. 189
29. अज्ञेय : एक अध्ययन - भोलाभाई पटेल, प्र.सं. 1983, 202-203
30. वही, पृ. 208

000

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR